महाविद्यालय परिचय

तत्कालीन राजपूताना राज्य के राजवंश एवं श्रेष्ठिवर्ग सदैव साहित्यानुरागी रहे हैं और इसी परम्परा में उन्होंने न केवल राज्य के अपितु भारतवर्ष के विविध प्रान्तों से विद्वानों को आमन्त्रित कर संरक्षण प्रदान किया। वेद, धर्म एवं संस्कृति के सेवक कच्छवाह वंशज महाराजाधिराज रामसिंह द्वितीय ने विद्वानों को संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से सन् 1852 में महाराज संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की। स्वतन्त्रता के पश्चात् राज्यसरकार के संस्कृत निदेशालय द्वारा संचालित, एवं जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से सम्बद्ध इस महाविद्यालय का इतिहास डेढ सौ से अधिक वर्ष पुराना है। यह महाविद्यालय विश्व प्रसिद्ध पं. मधुसूदन ओझा, पं. मोती लाल शास्त्री, महामहोपाध्याय पं. गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी, जगद्गुरु शंकराचार्य पं. चन्द्रशेखर द्विवेदी, कालजयी कहानी 'उसने कहा था' के प्रसिद्ध लेखक पं. चन्द्रधरशर्मा 'गुलेरी' आदि भारत प्रसिद्ध विद्वानों की कर्मस्थली रहा है। यह महाविद्यालय आज भी अपनी प्राचीन संस्कृति एवं परम्परा को समेटे अविचलभाव से खड़ा है। नवीन भवन में स्थानान्तरित, अद्यतन सुविधाओं से सम्पन्न, वर्तमान युग के साथ निरन्तर प्रगतिपथ पर अग्रसर है। इस महाविद्यालय में संस्कृत संकाय के समस्त विषयों का अध्यापन/अनुसंधान करवाया जाता है। इसी के साथ हिन्दी, अंग्रेजी, राजनीति-विज्ञान एवं इतिहास जैसे आधुनिक विषयों के अध्यापन की व्यवस्था भी उपलब्ध है। यहाँ के आचार्यो एवं छात्रों ने समय समय पर सम्पूर्ण भारतवर्ष में अपनी प्रतिभा का उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए महाविद्यालय के गौरव को बढ़ाया है।

आयोजन-समिति

: अध्यक्ष :
प्रो. भास्कर शर्मा 'श्रोत्रिय'
प्राचार्य : राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
निदेशक : संस्कृत शिक्षा, राजस्थान

उपाध्यक्ष :
प्रो. शालिनी सक्सेना
निदेशक : शोध एवं विकास प्रकोष्ठ
समन्वयक : IQAC
094140–51119

: परामर्शदाता :
श्री नमामीशंकर बिस्सा
सदस्य : IQAC
सह–आचार्य : अंग्रेजी
098297–93478

संयोजक
डॉ. सीमा जैन
सहा. आचार्य : संस्कृत वाङ्मय
097998–86990

सह–संयोजक
डॉ. महेश कुमार शर्मा
सहा. आचार्य : व्याकरण
094606–94396

समन्वयक
डॉ. जितेन्द्र कुमार अग्रवाल
सह–आचार्य : साहित्य
098281–02448

सह–समन्वयक
डॉ. आलोक शर्मा
सहा. आचार्य : ज्योतिष
098290–15554

स्वागत एवं प्रबंध समिति

डॉ. इन्दिरा खत्री, डॉ. रेखा वर्मा, डॉ. कमलकिशोर सैनी, डॉ. लक्ष्मी नारायण शर्मा, डॉ. शम्भूनाथ झा, श्री शैलेन्द्र जैन, डॉ. अशोक पलसानिया, डॉ. उमेश प्रसाद दाश, डॉ. हरिराम मीना, डॉ. आशुतोष शर्मा, श्री रामनारायण शर्मा, श्री दीपक पालीवाल, डॉ. पृथ्वीसिंह बूंदवाल, डॉ. भारती शर्मा, डॉ. रवि शर्मा, श्रीमती पूनम आर्य, श्री कैलाशचन्द्र सैन, श्री अभिषेक भारद्वाज, श्री दीपक आलोरिया, श्री रोशन मीणा, श्री कृष्णगोपाल गुजराती, श्रीमती सन्तोष मीणा, श्रीमती मनोहरी सोयाल।

राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
गाँधी नगर, जयपुर द्वारा आयोजित

द्वि-दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

अनुसन्धान प्रक्रिया एवं सिद्धान्त

16–17 जनवरी 2023

आयोजक :

IQAC, शोध एवं विकास प्रकोष्ठ
राजकीय महाराज आचार्य संस्कृत महाविद्यालय
NAAC (राष्ट्रीय मूल्यांकन प्रत्यायन परिषद) द्वारा बी ग्रेड प्राप्त
महात्मा गाँधी मार्ग, जयपुर – 302015 (राज.) दूरभाष : 0141–2706608
ई–मेल : maharaj.college@gmail.com

विषय-परिचय

भारतीय भाषाओं में अंग्रेजी Research शब्द के स्थान पर अनुसन्धान, अनुशीलन, गवेषणा, शोध इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ है। व्युत्पत्ति की दृष्टि से अनुसन्धान मूल शब्द (Re + Search) के अर्थ को सर्वाधिक स्पष्ट करता है। अनुसन्धान के चार मूल तत्त्व हैं :-

1. नवीन तथ्यों का अन्वेषण
2. उपलब्ध तथ्यों का एवं प्रचलित सिद्धान्तों का नवीन व्याख्यान।
3. विषय के अध्ययन में योगदान।
4. प्रतिपादन सौष्ठव

व्यापक अर्थ में शोध या अनुसन्धान ज्ञान के क्षेत्र में ज्ञान की खोज करना या विधिवत् गवेषणा करना होता है। वैज्ञानिक अनुसन्धान में वैज्ञानिक विधि का सहारा लेते हुए जिज्ञासा का समाधान करने की कोशिश की जाती है नवीन तथ्यों की खोज और प्राचीन तथ्यों एवं सिद्धान्तों का पुनः परीक्षण करना जिससे की नवीन तथ्यों का उद्घाटन हो सके, उसे शोध कहते हैं। शोध के अन्तर्गत बोधपूर्वक प्रयत्न से तथ्यों का संकलन कर सूक्ष्मग्राही एवं विवेचक बुद्धि से उसका अवलोकन विश्लेषण करके नए तथ्यों या सिद्धान्तों का उद्घाटन किया जाता है।

शोध मानव ज्ञान को दिशा प्रदान करता है तथा ज्ञान भण्डार को विकसित एवं परिमार्जित करता है।

शोध जिज्ञासा की मूल प्रवृत्ति (Curiosity Instinct) की सन्तुष्टि करता हैं शोध से व्यावहारिक समस्याओं का समाधान होता है। शोध पूर्वाग्रहों के निदान और निवारण में सहायक है। शोध अनेक नवीन कार्यविधियों व उत्पादों को विकसित करता है। शोध ज्ञान के विविध पक्षों में गहनता और सूक्ष्मता लाता है। शोध से व्यक्ति का बौद्धिक विकास होता है।अनुसन्धान हमारी आर्थिक प्रणाली में लगभग सभी सरकारी नीतियों के लिए आधार प्रदान करता है। अनुसन्धान के माध्यम से हम वैकल्पिक नीतियों पर विचार और इन विकल्पों में से प्रत्येक के परिणामों की जाँच कर सकते हैं। अनुसन्धान, सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है। शोध सामाजिक विकास का सहायक है। यह एक तरह का औपचारिक प्रशिक्षण है। अनुसन्धान नए सिद्धान्त का सामान्यीकरण करने के लिए हो सकता है। अनुसन्धान नई शैली और रचनात्मकता के विकास के लिए हो सकता है। विज्ञान विषयक शोध कार्यों में शोध प्रविधि पर विशेष बल दिया जाता है। संस्कृत क्षेत्र में भी वैज्ञानिक अनुसंधान क्रियाविधि में यथावश्यक संशोधन कर प्रयोग किया जाना अपेक्षित है।

शोध प्रविधि के प्रमुख अंग हैं :-

सामग्री संकलन, सामग्री परीक्षण (प्रमाणीकरण), विषय वस्तु त्याग एवं ग्रहण, संश्लेषण-विश्लेषण द्वारा वर्गीकरण, निष्कर्ष।

उक्त शोध क्रियाविधि को परम्परागत संस्कृत विषयों (वेद, व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, धमशास्त्र आदि) के अनुसन्धान हेतु किस प्रकार प्रयुक्त किया जा सकता है अथवा इनमें क्या संशोधन अपेक्षित है इस विषय पर चर्चा हेतु महाविद्यालय के Research and Development Cell द्वारा अनुसंधान प्रक्रिया एवं सिद्धान्त विषय पर द्विदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित करने का निर्णय लिया गया है।

संस्कृत भाषा एवं साहित्य में अनुसन्धान की गहन एवं महत्त्वपूर्ण सम्भावनाएं निहित हैं। तथ्यात्मक अनुसन्धान के साथ तुलनात्मक एवं आलोचनात्मक अनुसन्धान की दृष्टि से भी संस्कृत साहित्य में अपार सम्भावनाएं विद्यमान हैं। प्राचीन इतिहास एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में संस्कृत की प्राचीन पाण्डुलिपियों का योगदान महत्त्वपूर्ण हैं। अतः प्राचीन पाण्डुलिपियों को पढ़ने, संरक्षण करने एवं उनके सम्पादन की प्रक्रिया भी अनुसन्धान प्रविधि में सम्मिलित है। इस संगोष्ठी का उद्देश्य संस्कृत क्षेत्र में अनुसन्धान की सम्भावनाओं के उद्घाटन के साथ अनुसन्धान की वैज्ञानिक प्रविधि को समझना है।

संगोष्ठी के प्रमुखतः विवेच्य बिन्दु निम्नलिखितानुसार हैं :-

1. शास्त्रीय अनुसन्धान क्रियाविधि।
2. तुलनात्मक अनुसन्धान क्रियाविधि।
3. शोध के नवीन क्षेत्र एवं सम्भावनाएं।
4. शोध सामग्री संकलन प्रक्रिया।
5. शोध सामग्री परीक्षण/प्रमाणीकरण प्रक्रिया।
6. ग्रन्थ/पाण्डुलिपि सम्पादन के सिद्धान्त।
7. पाण्डुलिपि संरक्षण/पठन।
8. शोध परियोजना निर्माण विधि।
9. शोधपत्र लेखन।
10. पाठालोचन के सिद्धान्त।
11. वंशवृक्ष निर्माण।
12. शोधप्रबन्ध लेखन एवं अन्य सम्बद्ध विषय।

पत्र-वाचन

कृपया संगोष्ठी में आपके द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले आलेख के विषय के सम्बन्ध में अविलम्ब अवगत कराने का कष्ट करें ताकि संगोष्ठी के विविध सत्रों का तदनुसार संयोजन किया जा सके। कृपया आलेख तथा सारांश (Abstract) की एक प्रति आवश्यक रूप से अंग्रेजी में Times New Roman (12 Size) हिन्दी में Devlys010, चाणक्य, श्री लिपि (14 size) में कम्प्यूटर द्वारा अंकित रूप में एम. एस. वर्ड में इमेल Development.research2022@gmail.com पर 10 जनवरी 2023 तक आवश्यक रूप से प्रेषित कर दें। विलम्ब से प्राप्त शोधालेखों को प्रकाशन हेतु स्वीकार किया जाना सम्भव नहीं होगा।

पंजीकरण-शुल्क

प्राध्यापक/ प्रोफेसर्स	- 700/-रू
महाविद्यालय अथवा विश्वविद्यालय के शोधार्थी	- 500/-रू.

: पंजीकरण हेतु लिंक :

https://forms.gle/q9xXpKj2wWYAk9bPA

रजिस्ट्रेशन एवं फीस के लिए दिए गए QR Code को स्कैन करे, साथ ही शुल्क के लिए UPI Id 9982211119@SBI का प्रयोग करे।

सबमिट फार्म की पीडीएफ आपके मेल पर आएगी जिसे साथ लेकर पधारें।

फॉर्म भरने हेतु स्कैन करे

फीस भरने हेतु स्कैन करे